The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 2 | February 2024
ISSN: 2583-973X
Website: www.theacademic.in

भारत की विदेश नीति : अतीत और वर्तमान

सर्वेश कुमार सिंह

सहा. प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान
श्री अग्रसेन कन्या महाविद्यालय, कोरबा (छ.ग.)
मेल- 9827967687.ss@gmail.com

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Keywords :
विदेश नीति, अंतर्राष्ट्रीय संबंध, अंतर्राष्ट्रीय अभिनेता (अभिकर्ता), अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली

ABSTRACT

विदेश नीति एक ऐसा शब्द है जिसका इस्तेमाल अक्सर अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के संदर्भ में किया जाता है, लेकिन इसका वास्तव में क्या मतलब है? इसे कैसे बनाया और लागू किया जाता है? इसके प्रकार और विशेषताएँ क्या हैं? यह हमारे जीवन और मानवता के भविष्य के लिए क्यों महत्वपूर्ण और प्रासंगिक है? विदेश नीति लक्ष्यों, रणनीतियों और कार्यों का समूह है जिसे एक राज्य या गैर-राज्य अभिनेता अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली में अन्य अभिनेताओं के साथ अपने संबंधों में अपनाता है। विदेश नीति अभिनेता के हितों, मूल्यों और प्राथमिकताओं को दर्शाती है, और यह वैश्विक क्षेत्र में उसके निर्णयों और व्यवहारों का मार्गदर्शन करती है। विदेश व्यापार नीति, विदेश नीति का एक उपप्रकार है जो अंतरराष्ट्रीय प्रणाली में अभिनेता और अन्य अभिनेताओं के बीच वस्तुओं और सेवाओं के आदान-प्रदान के विनियमन और संवर्धन पर केंद्रित है।

विदेश नीति का इतिहास

विदेश नीति का इतिहास बहुत पुराना और समृद्ध है, और यह समय के साथ-साथ विकसित और परिवर्तित हुई है, साथ ही अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली और इसमें शामिल लोगों के विकास और परिवर्तन के साथ। विदेश नीति का इतिहास प्राचीन

काल से जुड़ा हुआ है, जब पहली सभ्यताएँ और साम्राज्य उभरे और एक-दूसरे के साथ बातचीत की, और जब गठबंधन, संधियाँ और युद्ध जैसी विदेश नीति के पहले रूपों का अभ्यास किया गया।

मध्यकालीन और आधुनिक काल में विदेश नीति भी विकसित और विविधतापूर्ण रही, जब विभिन्न राज्यों और साम्राज्यों का उत्थान और पतन, विभिन्न धर्मों और विचारधाराओं का उद्भव और प्रसार, तथा विभिन्न क्षेत्रों और महाद्वीपों की खोज और उपनिवेशीकरण ने अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली और इसमें शामिल व्यक्तियों को आकार दिया और उनका नया स्वरूप तैयार किया। विदेश नीति बनाने में हमेशा सावधानीपूर्वक विचार और गणना शामिल रही है, क्योंकि राज्य और अन्य अभिनेता अपने हितों को आगे बढ़ाने और लगातार बदलते माहौल में अपनी सुरक्षा की रक्षा करना चाहते हैं। राष्ट्रीय संप्रभुता, गैर-हस्तक्षेप और आत्मरक्षा जैसे विदेश नीति के सिद्धांतों ने भी अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के संचालन को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

प्राचीन काल (3000 ईसा पूर्व - 500 ईस्वी)

- प्राचीन भारत में विदेश नीति का आधार धर्म, राजनीति और अर्थव्यवस्था पर आधारित था।

- महाजनपदों और मौर्य साम्राज्य के दौरान विदेश नीति का विकास हुआ।

- कौटिल्य का "अर्थशास्त्र" विदेश नीति के सिद्धांतों का एक महत्वपूर्ण स्रोत है।

प्राचीन भारतीय विदेश नीति के सिद्धांत

1. अहिंसा: प्राचीन भारतीय विदेश नीति में अहिंसा का सिद्धांत महत्वपूर्ण था। इसका अर्थ था कि युद्ध को अंतिम विकल्प के रूप में इस्तेमाल किया जाना चाहिए।
2. साम, दाम, दंड, भेद: यह चार सिद्धांत प्राचीन भारतीय विदेश नीति के मूल में थे। साम का अर्थ था शांतिपूर्ण तरीके से समस्या का समाधान करना, दाम का अर्थ था आर्थिक प्रलोभन देना, दंड का अर्थ था दंड देना, और भेद का अर्थ था विभाजन करना।
3. राजधर्म: प्राचीन भारतीय विदेश नीति में राजधर्म का सिद्धांत महत्वपूर्ण था। इसका अर्थ था कि राजा का कर्तव्य था कि वह अपने राज्य की रक्षा करे और अपने नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करे।

प्राचीन भारतीय विदेश नीति के उदाहरण

1. मौर्य साम्राज्य: मौर्य साम्राज्य के दौरान, भारतीय विदेश नीति में विस्तारवादी नीति अपनाई गई थी। सम्राट अशोक ने अपने शासनकाल में कई युद्ध लड़े और अपने साम्राज्य का विस्तार किया।

2. गुप्त साम्राज्य: गुप्त साम्राज्य के दौरान, भारतीय विदेश नीति में शांतिपूर्ण तरीके से समस्या का समाधान करने का प्रयास किया गया था। सम्राट चंद्रगुप्त द्वितीय ने अपने शासनकाल में कई शांतिपूर्ण समझौते किए और अपने साम्राज्य का विस्तार किया।

मध्यकाल (500 - 1757 ईस्वी)

- मध्यकाल में भारत में मुस्लिम शासन की स्थापना हुई और विदेश नीति में बदलाव आया।

- मुगल साम्राज्य के दौरान विदेश नीति का विकास हुआ और यूरोपीय देशों के साथ संबंध स्थापित हुए।

मुगल काल में भारत की विदेश नीति की विशेषताएं

1. केंद्रीकृत विदेश नीति: मुगल साम्राज्य में विदेश नीति केंद्रीकृत थी, जिसका अर्थ था कि यह सीधे सम्राट के नियंत्रण में थी।

2. सैन्य शक्ति का प्रयोग: मुगल साम्राज्य ने अपनी विदेश नीति में सैन्य शक्ति का प्रयोग किया, जिससे वह अपने पड़ोसी देशों पर दबाव डाल सके।

3. व्यापारिक संबंध: मुगल साम्राज्य ने अपने व्यापारिक संबंधों को मजबूत करने के लिए विदेश नीति का प्रयोग किया, जिससे वह अपनी अर्थव्यवस्था को मजबूत कर सके।

4. इस्लामिक दुनिया के साथ संबंध: मुगल साम्राज्य ने इस्लामिक दुनिया के साथ अपने संबंधों को मजबूत करने के लिए विदेश नीति का प्रयोग किया, जिससे वह अपने धार्मिक और सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत कर सके।

उदाहरण

1. हुमायूं की विदेश नीति: हुमायूं ने अपनी विदेश नीति में सैन्य शक्ति का प्रयोग किया और अपने पड़ोसी देशों पर दबाव डाला।

2. अकबर की विदेश नीति: अकबर ने अपनी विदेश नीति में व्यापारिक संबंधों को मजबूत करने पर ध्यान केंद्रित किया और अपने पड़ोसी देशों के साथ व्यापारिक समझौते किए।

3. औरंगजेब की विदेश नीति: औरंगजेब ने अपनी विदेश नीति में इस्लामिक दुनिया के साथ अपने संबंधों को मजबूत करने पर ध्यान केंद्रित किया और अपने पड़ोसी देशों पर दबाव डाला।

इन उदाहरणों से यह स्पष्ट होता है कि मुगल काल में भारत की विदेश नीति बहुत महत्वपूर्ण थी और इसका प्रयोग सैन्य शक्ति, व्यापारिक संबंधों और इस्लामिक दुनिया के साथ संबंधों को मजबूत करने के लिए किया गया था।

आधुनिक काल (1757 - 1947 ईस्वी)

- आधुनिक काल में भारत में ब्रिटिश शासन की स्थापना हुई और विदेश नीति में बदलाव आया।

- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई और स्वतंत्रता संग्राम के दौरान विदेश नीति का विकास हुआ।

ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने 1757 में प्लासी की लड़ाई में जीत हासिल की और भारत में अपना शासन स्थापित किया। इसके बाद, ब्रिटिश सरकार ने भारत की विदेश नीति को नियंत्रित करना शुरू किया।

ब्रिटिश काल में भारत की विदेश नीति की विशेषताएं

1. ब्रिटिश सरकार का नियंत्रण: ब्रिटिश सरकार ने भारत की विदेश नीति को नियंत्रित किया और अपने हितों को बढ़ावा देने के लिए नीतियाँ बनाईं।
2. साम्राज्यवादी नीति: ब्रिटिश सरकार ने साम्राज्यवादी नीति अपनाई और भारत को अपना उपनिवेश बनाया।
3. आर्थिक हित: ब्रिटिश सरकार ने भारत की आर्थिक नीतियों को नियंत्रित किया और अपने आर्थिक हितों को बढ़ावा देने के लिए नीतियाँ बनाईं।
4. सैन्य शक्ति का प्रयोग: ब्रिटिश सरकार ने सैन्य शक्ति का प्रयोग करके अपने हितों को बढ़ावा दिया और भारत को अपने नियंत्रण में रखा।

उदाहरण

1. डलहौजी की विदेश नीति: डलहौजी ने अपनी विदेश नीति में साम्राज्यवादी नीति अपनाई और भारत को अपना उपनिवेश बनाया।
2. कर्जन की विदेश नीति: कर्जन ने अपनी विदेश नीति में आर्थिक हितों को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित किया और भारत की आर्थिक नीतियों को नियंत्रित किया।
3. चर्चिल की विदेश नीति: चर्चिल ने अपनी विदेश नीति में सैन्य शक्ति का प्रयोग करके अपने हितों को बढ़ावा दिया और भारत को अपने नियंत्रण में रखा।

स्वतंत्रता के बाद भारत की विदेश नीति (1947 ईस्वी - वर्तमान)

- स्वतंत्रता के बाद भारत ने गुटनिरपेक्षता की नीति अपनाई और विदेश नीति में बदलाव आया।
- भारत ने संयुक्त राष्ट्र, गुटनिरपेक्ष आंदोलन और अन्य अंतर्राष्ट्रीय संगठनों में सक्रिय भूमिका निभाई है।

- वर्तमान में, भारत की विदेश नीति क्षेत्रीय और वैश्विक मुद्दों पर केंद्रित है, जैसे कि आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन और आर्थिक विकास।
- स्वतंत्र भारत की प्रारंभिक विदेश नीति का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा और प्रोत्साहन करना था। यह नीति पंडित जवाहरलाल नेहरू द्वारा निर्धारित की गई थी।

स्वतंत्र भारत की विदेश नीति के मुख्य तत्व

a. राष्ट्रीय हित: विदेश नीति में राष्ट्रीय हित सबसे महत्वपूर्ण था।
b. अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा: भारत ने अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा में वृद्धि करने का प्रयास किया।
c. गुटनिरपेक्षता: भारत ने गुटनिरपेक्षता की नीति अपनाई, जिसका अर्थ था कि वह किसी भी गुट या ब्लॉक में शामिल नहीं होगा।
d. सहयोग और मैत्री: भारत ने अन्य देशों के साथ सहयोग और मैत्री का संबंध बनाने का प्रयास किया।

इन तत्वों के आधार पर, स्वतंत्र भारत की विदेश नीति एक ऐसी नीति है जो राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा और प्रोत्साहन करने के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा में वृद्धि करने का प्रयास करती रही है|

विदेश नीति के उद्देश्य

ये वे लक्ष्य और प्राथमिकताएँ हैं जिन्हें एक राज्य अन्य राज्यों और अंतर्राष्ट्रीय अभिनेताओं के साथ अपनी बातचीत के माध्यम से प्राप्त करना चाहता है। विदेश नीति के उद्देश्य राज्य के विशेष हितों और आकांक्षाओं के आधार पर भिन्न हो सकते हैं। दूसरी ओर, विदेश व्यापार नीति के उद्देश्य विशिष्ट लक्ष्य और लक्ष्य हैं जो एक राज्य अपनी विदेशी व्यापार गतिविधियों, जैसे निर्यात, आयात और निवेश के लिए निर्धारित करता है।

विदेश नीति का महत्व

विदेश नीति हमारे जीवन और मानवता के भविष्य के लिए महत्वपूर्ण और प्रासंगिक है, क्योंकि यह वैश्विक क्षेत्र में हमारे सामने आने वाले विभिन्न मुद्दों और विषयों जैसे सुरक्षा, व्यापार, मानवाधिकार, विकास और पर्यावरण संरक्षण को प्रभावित करती है और उनसे प्रभावित होती है। विदेश नीति अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली में अभिनेताओं के बीच संचार और सहयोग को भी सक्षम और सुगम बनाती है, और उनके बीच उत्पन्न होने वाले संघर्षों और विवादों को रोकने और हल करने में मदद करती है। विदेश नीति विश्व व्यवस्था और वैश्विक शासन को भी आकार देती है और प्रभावित करती है जिसमें हम रहते हैं और जिसकी आकांक्षा रखते हैं।

विदेश नीति के प्रकार

विदेश नीति एकरूप या एकरूप नहीं होती, बल्कि विविध और जटिल होती है, और इसे विभिन्न तरीकों से वर्गीकृत और विश्लेषित किया जा सकता है। एक सामान्य तरीका यह है कि इसे दो व्यापक श्रेणियों में विभाजित किया जाए: कठोर और नरम।

कठोर विदेश नीति में बल या बल की धमकी का प्रयोग शामिल होता है, जैसे सैन्य हस्तक्षेप, आर्थिक प्रतिबंध और परमाणु निवारण, ताकि कर्ता के लक्ष्यों और हितों को प्राप्त किया जा सके, तथा अन्य कर्ताओं को अनुपालन या स्वीकार करने के लिए बाध्य किया जा सके।

नरम विदेश नीति में आकर्षण या अनुनय का प्रयोग शामिल होता है, जैसे सांस्कृतिक आदान-प्रदान, मानवीय सहायता और सार्वजनिक कूटनीति, ताकि कर्ता के लक्ष्यों और हितों को प्राप्त किया जा सके, तथा अन्य कर्ताओं को सहयोग या सहकार्य करने के लिए प्रभावित या राजी किया जा सके।

भारतीय विदेश नीति के सैद्धांतिक मान्यताएँ (मौलिक सिद्धांत)

1. पंचशील: भारतीय विदेश नीति का मूल आधार पंचशील है, जिसमें अहिंसा, अपरिग्रह, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और सत्य शामिल हैं।

2. गुटनिरपेक्षता: भारत ने गुटनिरपेक्षता की नीति अपनाई है, जिसका अर्थ है कि वह किसी भी गुट या ब्लॉक में शामिल नहीं होगा।

3. अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा: भारत अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है।

4. सहयोग और मैत्री: भारत अन्य देशों के साथ सहयोग और मैत्री का संबंध बनाने का प्रयास करता है।

5. राष्ट्रीय हित: भारतीय विदेश नीति का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा और प्रोत्साहन करना है।

भारतीय विदेश नीति के नीतिगत दिशानिर्देश

1. क्षेत्रीय सुरक्षा: भारत अपने क्षेत्र में शांति और सुरक्षा बनाए रखने के लिए प्रतिबद्ध है।

2. आर्थिक सहयोग: भारत आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है।

3. सांस्कृतिक आदान-प्रदान: भारत सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है।

4. मानवाधिकार: भारत मानवाधिकारों की रक्षा और प्रोत्साहन करने के लिए प्रतिबद्ध है।

5. पर्यावरण संरक्षण: भारत पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है।

भारत की विदेश नीति और वसुधैव कुटुंबकम की अवधारणा में गहरा संबंध है। वसुधैव कुटुंबकम का अर्थ है "पूरी पृथ्वी एक परिवार है"। यह अवधारणा भारतीय संस्कृति और दर्शन में गहराई से जड़ी हुई है। भारत की विदेश नीति में वसुधैव कुटुंबकम की अवधारणा को निम्नलिखित तरीकों से देखा जा सकता है:

1. सार्वभौमिक भाईचारा: भारत की विदेश नीति में सार्वभौमिक भाईचारा की अवधारणा को बढ़ावा देने पर जोर दिया जाता है। यह अवधारणा वसुधैव कुटुंबकम के सिद्धांत पर आधारित है।

2. शांति और सहयोग: भारत की विदेश नीति में शांति और सहयोग को बढ़ावा देने पर जोर दिया जाता है। यह वसुधैव कुटुंबकम के सिद्धांत के अनुरूप है।

3. वैश्विक नागरिकता: भारत की विदेश नीति में वैश्विक नागरिकता की अवधारणा को बढ़ावा देने पर जोर दिया जाता है। यह अवधारणा वसुधैव कुटुंबकम के सिद्धांत पर आधारित है।

4. सांस्कृतिक आदान-प्रदान: भारत की विदेश नीति में सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देने पर जोर दिया जाता है। यह वसुधैव कुटुंबकम के सिद्धांत के अनुरूप है।

भारतीय विदेश नीति की विशेषताएँ :

1) राष्ट्रीय हितों का संरक्षण: भारतीय विदेश नीति का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय हितों का संरक्षण करना है
2) अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा: भारत अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है ।
3) गुटनिरपेक्षता: भारत ने गुटनिरपेक्षता की नीति अपनाई है, जिसका अर्थ है कि वह किसी भी गुट या ब्लॉक में शामिल नहीं होगा ।
4) आर्थिक सहयोग: भारत आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है ।
5) सांस्कृतिक आदान-प्रदान: भारत सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है ।
6) मानवाधिकार: भारत मानवाधिकारों की रक्षा और प्रोत्साहन करने के लिए प्रतिबद्ध है ।
7) पर्यावरण संरक्षण: भारत पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है ।

भारतीय विदेश नीति के सामने प्रमुख क्षेत्रीय चुनौतियाँ

1. पाकिस्तान के साथ संबंध: पाकिस्तान के साथ संबंधों में तनाव और आतंकवाद की समस्या एक बड़ी चुनौती है।

2. चीन के साथ सीमा विवाद: चीन के साथ सीमा विवाद और अरुणाचल प्रदेश और अक्साई चिन के मुद्दे पर तनाव एक बड़ी चुनौती है।

3. नेपाल और भूटान के साथ संबंध: नेपाल और भूटान के साथ संबंधों में तनाव और सीमा विवाद एक चुनौती है।

भारतीय विदेश नीति के सामने प्रमुख वैश्विक चुनौतियाँ

1. अमेरिका और चीन के बीच तनाव: अमेरिका और चीन के बीच तनाव और व्यापार युद्ध की स्थिति एक बड़ी चुनौती है।
2. आतंकवाद और उग्रवाद: आतंकवाद और उग्रवाद की समस्या एक बड़ी चुनौती है।
3. जलवायु परिवर्तन: जलवायु परिवर्तन और इसके प्रभाव एक बड़ी चुनौती है।

भारतीय विदेश नीति के सामने प्रमुख आर्थिक चुनौतियाँ

1. व्यापार और आर्थिक विकास: व्यापार और आर्थिक विकास की चुनौतियाँ एक बड़ी चुनौती हैं।
2. विदेशी निवेश और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण: विदेशी निवेश और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण की चुनौतियाँ एक बड़ी चुनौती हैं।
3. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार समझौतों में भागीदारी: अंतर्राष्ट्रीय व्यापार समझौतों में भागीदारी की चुनौतियाँ एक बड़ी चुनौती है।

भारतीय विदेश नीति में परिवर्तन

हाल के वर्षों में, भारतीय विदेश नीति में कई परिवर्तन हुए हैं, इनमें से कुछ प्रमुख परिवर्तन हैं -

- ✓ गुटनिरपेक्षता से सक्रिय विदेश नीति की ओर बढ़ना: भारत ने अपनी विदेश नीति में सक्रियता बढ़ाई है और वैश्विक मामलों में अधिक सक्रिय भूमिका निभाई है।
- ✓ आर्थिक सहयोग पर बढ़ता जोर: भारत ने अपने आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न देशों के साथ समझौते किए हैं।
- ✓ क्षेत्रीय सुरक्षा पर बढ़ता ध्यान: भारत ने अपनी क्षेत्रीय सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न देशों के साथ समझौते किए हैं।

भारतीय विदेश नीति के परिवर्तन के आधार

वैश्विक परिस्थितियाँ

1. वैश्विक राजनीतिक परिवर्तन: वैश्विक राजनीतिक परिवर्तन, जैसे कि शीत युद्ध की समाप्ति और वैश्वीकरण की बढ़ती प्रवृत्ति, भारतीय विदेश नीति को प्रभावित करते हैं।
2. आर्थिक परिवर्तन: वैश्विक आर्थिक परिवर्तन, जैसे कि वैश्वीकरण और आर्थिक संकट, भारतीय विदेश नीति को प्रभावित करते हैं।

3. सुरक्षा परिवर्तन: वैश्विक सुरक्षा परिवर्तन, जैसे कि आतंकवाद और साइबर हमले, भारतीय विदेश नीति को प्रभावित करते हैं।

राष्ट्रीय हित

1. आर्थिक विकास: भारत का आर्थिक विकास एक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय हित है, जो विदेश नीति को प्रभावित करता है।

2. सुरक्षा: भारत की सुरक्षा एक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय हित है, जो विदेश नीति को प्रभावित करता है।

3. सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संबंध: भारत के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संबंध विदेश नीति को प्रभावित करते हैं।

सरकार की नीतियाँ

1. राजनीतिक दलों की नीतियाँ: भारत में राजनीतिक दलों की नीतियाँ विदेश नीति को प्रभावित करती हैं।

2. सरकार की प्राथमिकताएँ: सरकार की प्राथमिकताएँ, जैसे कि आर्थिक विकास और सुरक्षा, विदेश नीति को प्रभावित करती हैं।

3. विदेश मंत्रालय की भूमिका: विदेश मंत्रालय की भूमिका विदेश नीति को प्रभावित करती है।

मोदी काल में भारत की विदेश नीति में परिवर्तन

- पड़ोसी देशों के साथ संबंधों में सुधार: मोदी सरकार ने पड़ोसी देशों के साथ संबंधों में सुधार पर विशेष ध्यान दिया है। इसने भारत के पड़ोसी देशों के साथ आर्थिक और राजनीतिक संबंधों को मजबूत करने के लिए कई कदम उठाए हैं।
- अंतर्राष्ट्रीय संगठनों में भागीदारी: मोदी सरकार ने अंतर्राष्ट्रीय संगठनों में भागीदारी बढ़ाने पर विशेष ध्यान दिया है। इसने संयुक्त राष्ट्र, ब्रिक्स, और शंघाई सहयोग संगठन जैसे संगठनों में सक्रिय भूमिका निभाई है।
- आर्थिक कूटनीति: मोदी सरकार ने आर्थिक कूटनीति पर विशेष ध्यान दिया है। इसने विदेशी निवेश को बढ़ावा देने, व्यापार समझौतों पर हस्ताक्षर करने, और भारतीय कंपनियों को विदेशी बाजारों में प्रवेश करने में मदद करने के लिए कई कदम उठाए हैं।
- सांस्कृतिक कूटनीति: मोदी सरकार ने सांस्कृतिक कूटनीति पर विशेष ध्यान दिया है। इसने भारतीय संस्कृति को विदेशों में बढ़ावा देने के लिए कई कदम उठाए हैं, जिनमें विदेशों में भारतीय सांस्कृतिक केंद्रों की स्थापना और भारतीय कला और संस्कृति के प्रदर्शन शामिल हैं।

एस. जयशंकर का भारत की विदेश नीति में योगदान

A- विदेश नीति का पुनर्निर्धारण

1. पड़ोसी देशों के साथ संबंधों में सुधार: जयशंकर ने पड़ोसी देशों के साथ संबंधों में सुधार पर विशेष ध्यान दिया है।
2. अंतर्राष्ट्रीय संगठनों में भागीदारी: जयशंकर ने अंतर्राष्ट्रीय संगठनों में भागीदारी बढ़ाने पर विशेष ध्यान दिया है।
3. आर्थिक कूटनीति: जयशंकर ने आर्थिक कूटनीति पर विशेष ध्यान दिया है और विदेशी निवेश को बढ़ावा देने के लिए कई कदम उठाए हैं।

B-विदेश नीति का विस्तार

1. विदेश नीति का विस्तार: जयशंकर ने विदेश नीति का विस्तार करने पर विशेष ध्यान दिया है और नए देशों के साथ संबंधों को मजबूत करने के लिए कई कदम उठाए हैं।
2. विदेश नीति का लोकतंत्रीकरण: जयशंकर ने विदेश नीति का लोकतंत्रीकरण करने पर विशेष ध्यान दिया है और विदेश नीति के निर्माण में जनता की भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए कई कदम उठाए हैं।

C-विदेश नीति का प्रभाव

1. विदेश नीति का प्रभाव: जयशंकर की विदेश नीति का प्रभाव विश्व में देखा जा सकता है और भारत की वैश्विक भूमिका को मजबूत करने में मदद की है।
2. विदेश नीति की प्रतिष्ठा: जयशंकर की विदेश नीति की प्रतिष्ठा विश्व में बढ़ी है और भारत को एक महत्वपूर्ण वैश्विक खिलाड़ी के रूप में स्थापित कि

वर्तमान में भारतीय विदेश नीति में हो रहे परिवर्तनों के नुकसान ?

- राष्ट्रीय हितों की उपेक्षा: भारतीय विदेश नीति में हो रहे परिवर्तनों के कारण राष्ट्रीय हितों की उपेक्षा हो सकती है ।
- अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में तनाव: भारतीय विदेश नीति में हो रहे परिवर्तनों के कारण अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में तनाव बढ़ सकता है।
- आर्थिक नुकसान: भारतीय विदेश नीति में हो रहे परिवर्तनों के कारण आर्थिक नुकसान हो सकता है, जैसे कि व्यापार समझौतों में बदलाव या विदेशी निवेश में कमी।
- सुरक्षा संबंधी चुनौतियाँ: भारतीय विदेश नीति में हो रहे परिवर्तनों के कारण सुरक्षा संबंधी चुनौतियाँ बढ़ सकती हैं, जैसे कि आतंकवाद या साइबर हमलों का खतरा।

- विदेश नीति की अस्थिरता: भारतीय विदेश नीति में हो रहे परिवर्तनों के कारण विदेश नीति की अस्थिरता बढ़ सकती है, जिससे देश की विदेश नीति की विश्वसनीयता पर प्रभाव पड़ सकता है।

दक्षिण एशियाई देशों के परिप्रेक्ष्य में भारत की विदेश नीति एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत दक्षिण एशिया में एक प्रमुख शक्ति है और इसकी विदेश नीति इस क्षेत्र में शांति, सुरक्षा और सहयोग को बढ़ावा देने के लिए डिज़ाइन की गई है। भारत की विदेश नीति के मुख्य उद्देश्यों में से एक दक्षिण एशियाई देशों के साथ संबंधों को मजबूत करना है। इसके लिए भारत ने कई कदम उठाए हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख हैं:

- दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (सार्क) में सक्रिय भूमिका: भारत सार्क में एक सक्रिय सदस्य है और इस संगठन के माध्यम से दक्षिण एशियाई देशों के साथ सहयोग को बढ़ावा देने के लिए काम करता है।
- दक्षिण एशियाई देशों के साथ द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करना: भारत ने दक्षिण एशियाई देशों के साथ द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने के लिए कई कदम उठाए हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख हैं राजनीतिक और आर्थिक सहयोग, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और सुरक्षा सहयोग।
- दक्षिण एशिया में शांति और सुरक्षा को बढ़ावा देना: भारत दक्षिण एशिया में शांति और सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए काम करता है। इसके लिए भारत ने कई कदम उठाए हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख हैं आतंकवाद के खिलाफ लड़ने, सीमा विवादों को हल करने और क्षेत्रीय सुरक्षा सहयोग को बढ़ावा देने।

भारत की वैश्विक राजनीति में भूमिका

1. वैश्विक आर्थिक मामले: भारत एक तेजी से बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था है, और इसकी आर्थिक नीतियाँ वैश्विक आर्थिक मामलों पर प्रभाव डालती हैं। जैसे कि विश्व व्यापार संगठन में इसकी भागीदारी।
2. अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा: भारत एक महत्वपूर्ण सैन्य शक्ति है, और इसकी सैन्य नीतियाँ वैश्विक सुरक्षा पर प्रभाव डालती हैं। जैसे कि संयुक्त राष्ट्र शांति सेना में इसकी भागीदारी।
3. वैश्विक शासन: भारत वैश्विक शासन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, और इसकी नीतियाँ वैश्विक मामलों पर प्रभाव डालती हैं। जैसे कि ग्रुप ऑफ ट्वेंटी में इसकी भागीदारी।
4. वैश्विक चुनौतियाँ: भारत वैश्विक चुनौतियों जैसे कि जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद और आर्थिक असमानता का सामना करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जैसे कि जलवायु परिवर्तन के खिलाफ लड़ने में इसकी भागीदारी।
5. क्षेत्रीय संगठन: भारत क्षेत्रीय संगठनों जैसे कि सार्क, ब्रिक्स और शंघाई सहयोग संगठन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

निष्कर्ष - विदेश नीति अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का एक महत्वपूर्ण पहलू है, जो वैश्विक क्षेत्र में राज्यों और गैर-राज्य अभिनेताओं के हितों, मूल्यों और आकांक्षाओं को प्रभावित करती है। यह एक जटिल और गतिशील क्षेत्र है जिसमें विभिन्न

अभिनेता, मुद्दे और कारक शामिल हैं जो एक दूसरे से बातचीत करते हैं और एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। राज्यों और गैर-राज्य अभिनेताओं के बीच, बातचीत और संबंधों को समझने और वैश्वीकृत दुनिया में उत्पन्न होने वाली चुनौतियों और अवसरों को संबोधित करने के लिए विदेश नीति को समझना आवश्यक है।

1- https://www.kailasheducation.com/2020/01/bharat-videsh-niti-nirdharak-tatva-siddhant.html
2- https://highereducation.mp.gov.in/Uploaded%20Document/1704%20Bhagat%20Singh%20Govt%20PG%20College%20Jaora/1704%20PPTS%20%20Dr%20Dushyant%20Bhadoria%20%20%E0%A4%AD%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A4%A4%20%E0%A4%95%E0%A5%80%20%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%A6%E0%A5%87%E0%A4%B6%20%E0%A4%A8%E0%A5%80%E0%A4%A4%E0%A4%BF.pdf
3- https://www.mea.gov.in/distinguished-lectures-detail-hi.htm?864
4- https://www.drishtiias.com/hindi/daily-updates/daily-news-editorials/india-foreign-policy-5
5- https://jgu.edu.in/blog/2024/02/23/what-is-foreign-policy/